Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Mans 2

13.D.77.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Śṛiṅgār-Śaktisē.

Suranjan Batteesee

शृङ्गारबत्तीसी ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज अवदेश महाराजा
मानसिंह बहादुर कायमजङ्ग
केसी, एस, आई, कृत ।

जिसमें

भक्तजन दुःख हरण सर्व्व सुख करण श्रीराधा
कृष्ण की रसलीला उत्तम कवित्तों में वर्णित है

वही

विज्ञाति विज्ञ श्रीमहाराज त्रिलोकीनाथसिंह
बहादुर की आज्ञानुसार

तीसरी बार

स्थानलखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

फ़रवरी सन् १८८२ ई० ॥

भूमिका॥

सकल भूदेव भाल भूषण शाकद्वीपीय द्विज वंशावतंस भूपालालिमाल लालित चरण रेणु श्रीमन्नृपति दर्शन-सिंह बहादुरात्मज सदा दानवारि धारार्द्र पाणिपल्लव साहित्य सार विचारैक चतुर चेतन यशोवृन्द संश्वेती कृत त्रिभुवन प्रजा रंजन प्रतीप भूयमान भंजन सकोव सरकशान महाराज मानसिंहबहादुर कायमजंग केसी एस आई अयोध्याधिपति ने सहृदयजन सादरा शृङ्गार लतिका नाम ग्रन्थ बनाय जगमें प्रसिद्ध कियो जब सन् १२६३ फसिलीमें लखनऊ का देश ईस्टइंडिया कम्पनी ने अपने आधीन करलियो तब उक्त महाराजको राज्य नष्ट करि क़ैद करिबे की मति कीनी उक्त महाराजने प्रथ-महिं ते या अभिप्रायजानि उसी सन्के आषाढ़मास में बनवास में मनदयो श्रावण भादोंमास बनहीं में व्यती-त भयो तहां चित्तके विनोदार्थ पावसऋतुवर्णन पूर्वक राधा माधव की लीला स्मरण कियो ताही को शृङ्गार-बत्तीसी संज्ञाकरिदीनी तदनन्तर शरत्काल में काशपुरी जाय मणिकर्णिका नहाय अविमुक्त पञ्चदशी बनाय वाराणसी की स्तुति कीनी फिर परमेश्वर की कृपाते राज्य प्राप्त हुआ और यह दोनों ग्रन्थ आजलौं अस्त-

व्यस्त परेरहे उनको परम कारुणिक दीनदयाल उक्त महाराज के स्थानस्थ महाराज त्रिलोकीनाथसिंह ने सुधारि छापने की आज्ञा दीनी ॥

शृंगारबत्तीसी में ३५ कवित्तहैं सो एक तौ छप्पै मंगलाचरण की है और द्वै दोहानते कविने स्वीय नाम अरु पिता को नाम ग्राम प्रतिपादन कीन्यो बाकी ३२ रहे या हेतु शृङ्गारबत्तीसीही ग्रन्थ को नाम उचित भयो ॥

अरुउक्त महाराजके बनाये स्फुट कवित्त बहुत हैं यह व्यंजन करिबे के हेतु इति या वाक्य के अनन्तर द्वै कवित्त उक्त महाराज रचित निवेश करिदियो ताते अब या ग्रन्थ में सब ३७ कवित्त या रीति सों हैं छप्पै १ दोहा २ सवैया ४ घनाक्षरी ३० ॥ * * * * *

——**——

श्रीगणेशायनमः ॥

शृङ्गारबत्तीसी ॥

महाराज मानसिंहकृत ॥

लिख्यते ॥

छप्पै ॥

एकै हैं विंव रूप राधिका श्याम कहावैं
ह्वै वश ब्रजयुबतीन चतुर चातुर मनभावैं
पंच वान रतिकोटि अङ्ग अङ्गनि पर वारे
कुलबलकरि ब्रज सुयश परमपावन बिस्तारे
द्विजदेवसातहूं भुवनमें अष्टसिद्धि दाताबिदित
मनसेवहुनवधाभक्तियुतनवरसमयब्रजराजनित॥१॥

दोहा ॥

अवध ईश मण्डन भुवन। दर्शन सिंह नरेश ॥
जिनकेयशसोंश्वेतभो। दिशिदिशिदेशविदेश २ ॥
तिनकोसुत अति अल्पमति। मानसिंह द्विजदेव ॥
कियशृंगार बतीसिका। हरिलीला परभेव॥ ३॥

सवैया

जादिनतेसुधिआई हिये नितबाढ़तै देखीउछाह किसोती। नाहदियो जिनसो हमसो तिनदीनी दयाकरि प्रीतिअगोती ॥ याजगमें विधिबाहुबली तियजेती रचीमतिहूंर-

चिओती। होतहू ह्वैहैं कहूंसजनी पिय प्यारीके अंतर मानमनोती ॥ ४ ॥ मधुरी मुसुक्यानि मनोहरमें मतिमेरी जुआनि ठगी सोठगी। अरुए गहबीले गुलाबके पातसे गातन दीठि लगीसोलगी ॥ सजनी वहिनेह मयीबतियांनि ते कामकी ज्योतिजगी सोजगी। अब कोऊ कितोऊ कहै सजनी जुहौं श्यामके रंगरँगी सोरँगी ॥ ५ ॥ घूमिघनेघुमरैं घनघोर चहूं चढ़ि नाचत मोर अटारी। त्यों द्विजदेव नई उनई दरसाति कदम्बनिकी छबिन्यारी ॥ चूनरिसी क्षितिमानोबिछी इमिसोहति इंद्रवधूकी पत्यारी। काहिन भावतिऐसी समय ठकुराइनिया हरियारी तिहारी ॥ ६ ॥

अथसंयोग शृंगार पावस ॥

घनाक्षरी

चूनरी सुरंगसजि सोही अंग अंगनि उमंगनि अनंग अँगना लौ उमहति है। सौंध बैठ झांकती झरोखनि तें कारी घटा चौहरे अटापै बिज्जुछटासी जगति है ॥ द्विजदेव सुनि सुनि शबद पपीहरा के पुनि पुनि आनँद पियूष में पगतिहै। चावन चुभीसी मनभावन के अंकतिन्हैं सावन की बूंदैं ये सुहावनी लगतिहैं ॥ ७ ॥ सावन के दिवस सुहावने सलोनेश्याम जीतिरति समरबिराजै श्यामा श्याम संग। द्विजदेव कीसों तन उबटि चहूंघा रहो चुंबनको चहल चुचाल चूनरीकोरंग ॥ पीतपट ताने हरषाने लखैं लपटाने उमहि२ घनश्याम दामिनी को ढंग। रति रन भीजे पैन मैन मद छीजे अरु रस बसहीजे तऊ

तनकपसीजे अंग ॥ ८ ॥ आज मणि मन्दिर मनोज मद चाखे दोऊ लगनि लगालगी के मगन मजेजपर । द्विज-देवता हूपै दुहूंके अलि आनन की दूनी द्युतिदै रही तमी-पतिके तेजपर ॥ नेसुक सम्हारि छल बल न छराको बन्द पौढ़ि रहे पाणि धरि कमल मलेजपर । छूटे रति समर छपाको सुख लूटिदोऊ नींदे रति मदन उनींदे परे सेजपर ॥ ९ ॥ साजि नवअंवर मनोज मदमाती बाल सांझही समयते अभिसार की तयारीकी । द्विजदेव झीने झीने बूंदन सुताही समै गरजि बरषि घन सघन अँध्यारीकी ॥ मगही में आय ताही मिलिगे गोविन्द तहां देखतै भुलाने छबि रूप रस वारीकी । सूही सजी सारीके जरी के जरतारीकी सुआनन उज्यारी में चलति चारु प्यारीकी ॥ १० ॥ कारो नभ कारी निशि कारियै डरारी घटा झूकन बहत पवन आनँद को कन्दरी । द्विज देव सांवरी सलोनी सजी श्यामजूपै कीने अभिसार लखि पावस अनन्दरी ॥ नागरी गुनागरी सुकैसे डरै रैनि उर जाके संगसो हैं ये सहायक अमन्दरी । बा-हन मनोरथ उमा हैं सँगवारी सखी मैनमद सुभट म-साल मुखचन्दरी ॥ ११ ॥ दाबि दाबि दंतन अधर छत-वंतकरै आपनेही पायनको आहट सुनत श्रौन । द्विजदेव लेतिभरि गातन पसेद अलि पातहूं की खरक जुहोति कहूं काहू भौन ॥ कंटकित होति अति उससि उसारनिते सहज सुबासन शरीर में जुलागे पौन । पंथही में कंतके

जोहोति यहहाल तौपै लालकी मिलनिहवैहै वालकी द-
शाधौं कौन ॥ १२ ॥ पायल निडारैं कटि किंकिणी उतारैं
कहूं हाथन तें झारि भीर टारति मलिन्द की। भूषण च-
मकते चमकिलगैं पायन में द्विजदेव आंखन बचाय अलि
वृन्दकी ॥ भौनते दमकि दामिनीलौं दुरै दूजे भौन त्यागि
गरबीली गति गौरव गयन्द की। याविधि ते जातिचली
सांवरी उमाहैं सखी आजभई चाहैं भागि उदित गोविन्द
की ॥ १३ ॥ सावनी के व्याज आज आई गांव गांवन ते
भावन ते लेने छरी करन पूसूनकी। गुरुजनहूं न गूढ़
गुनन रिझावैं तहां गोरी गुनवती गाय तानैं ठाहदूनकी ॥
द्विजदेव साजैं सबै अंगन सुरंग चीर झालरैं झमाकैं लगीं
कोर नख तूनकी। इंद्रके बधून की सुदेखी छबि तूने इत
दूनी छबि देखुरी गोविन्द के बधूनको ॥ १४ ॥ घहरि
घहरि घन सघन चहूंघा घेरि छहरि छहरि विषबूंद ब-
रसावैना। द्विजदेव कीसो अब चूक मति दावि अरे पा-
तकी पपीहा तू पियाकी धुनि गावैना ॥ फेरि ऐसो औसर
न ऐहै तेरे हाथ ये रे मटकि मटकि मोर शोर तू मचावैना
होंतौ बिनप्राण देंह चाहत तजोई अब कत हिम रश्मि तू
अकाश बीच धावैना ॥ १५ ॥ डारै कहूं मथनि बिसारै
कहूं घीको भाँड़ा बिकल बिगारै कहूं माखन मठामही।
भ्रमि भ्रमि आवति चहूंघा ते तुयाही मग प्रेम पय पूरके
प्रवाहन मनोवही ॥ झुरसि गईधौं कहूं काहूकी बियोग
झार बारबार विकल बिसूरति जहीं तहीं। एहो ब्रजराज

एक ग्वालिनी कहूं की आज भोरही ते द्वारपै पुकारति दहीदही ॥ १६ ॥ आयो एक प्रथमहिं परभृतभाव करि ताको गुण तोहिं यशुदाहूसों सुनाइहौं। दूजे चढ़िधायो कूर कुटिल अकूर बनि ताको यश युगहूं न गावत सिराइहौं ॥ अब यह आयो ऊधो सूधो सो दिखाति आलि कालिही तो याहू को कुसंग फल पाइहौं। होय जो सो होय कहि कोटि समुझावै कोय माथुर न आली अब काहू न पत्याइहौं ॥ १७ ॥ वृन्दाबन कुंजन में बंशीबट छाह असि कौतुक अनोखो एक आज लखि आई में। लागोहुतो हाट एक मदन धनीको तहां गोपिन को वृन्द रहो जूमि चहुंधाई में॥ द्विजदेव सौदा कीन रीति कछु भाषी जाय ह्वैरही जु नैन उन मदकी देखाई में। लैलै कछू रूप मन मोहनसों बीर वै अहीरनै गँवारी देहि हीरन बटाईमें १८ होतेरहे नव अंकुर की छबि छाहँक छारन में अनियारी। त्यों द्विजदेव कदम्बन गुच्छन एई नए उनए सुखकारी॥ कीजिये बेगि सनाथ इन्हैं चलिये बनकुंजन कुंजबिहारी। पावस कालके मेघनये नवनेह नई वृषभानु कुमारी १९ बूझेहू न सूझत सुघाट बाट जल थल बिनसी सकल मरयाद सब ठामकी। द्विजदेव देहरीके बाहर धरत पग फेरि सुधि करत न धामकी न ग्रामकी ॥ बूड़ति अथाहे कुल धरम निवाहे कौन बावरी बिलोकि यह झूकनि मुदाम की। पावस अँध्यारी हुती ऐसिऐ डरारी तापै आठोयाम रस बरषनि घनश्याम की ॥ २० ॥ वादिन गईती ब्रज

देखन करीन बन झूकमें जुपरी आय बंशी के अन्यासुरी। ताछन तें आली फिरौं बावरी सी रावरी सों द्विजदेव ने कहूं रुकी न पर सांसुरी॥ आजु कछु आई हिय सूरति समानी हुती रंचक बिहानी रैन धरकत पांसुरी। कीजै कहा राम अब जैये केहिठाम एरी फेरि बन बैरिनि बजी री बन बांसुरी॥ २१॥ घूमिकै चहूंघा धाय आवैं जलधर धार तड़ित पताके बाँके नभमें पसरिगे। द्विजदेव कालिन्दी समीपन के नीपनके पात पात योगिनी जमातन ते भरिगे॥ चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निज निज दांव ठांव ठांवन सँभरिगे। बिनय दुराय अबकीजै कहा माय हाय पावस महीप के चहूंघा घेरे परिगे २२ धुंधुरित धुरि धुरवान की सुछाई नभ जल धर धारैं धरा परसन लागीरी। द्विजदेव होती कछु ललित कछारैं त्यों कदम्बनकी डारैं रस बरषन लागीरी॥ कालिहीते देखि बन बेलिन की बनक नवेलिन की मति अति अरसन लागीरी। बेगि लिखु पाती वे सँघाती वा गोपालै देखु पावस अवाती ब्रज दरशन लागीरी॥ २३॥ उमड़ि घुमड़ि घन छांडत अखंडधार अतिही पचंड पौन झूकन बहतु है। द्विजदेव संध्याको कोलाहल चहूंघा नभ शैलते जलाहल को जोग उमहतु है॥ बुद्धिबल थाको सोई प्रबल निशाको मेघ देखि ब्रजसूनो बैर आपनो गहतु है। एहोगिरिधारी राखोशरण तिहारीअब फेरि यहिबारी ब्रज बूड़न चहतु है॥ २४॥ कूकि कूकि केकी हिय हूकनि

बढ़ावे क्योंन बिषधर भोजन के अति उतपातीरी। साजि दल बादर डरावने डरावै करैं ये तो घनश्याम जूके परम संघातीरी॥ अजगुति एकतोहिं बूझन चहति आली द्विजदेव की सों कछु बूझति सकातीरी। अबला अबल जानि सूनी परी सेज मोहिं कैसे छन जोन्ह की दरकति छातीरी॥ २५॥ जादिनते प्यारे पिय पीतम सिधारे कहूं जानि ब्रज मण्डल घनेई घने उतपात। द्विजदेव तादिनतें बैठी दुरि मन्दिरमें सुमुखि सखीनहूं की नेकहूं सुनी न बात॥ बूढ़ो बिन दांतको बिचारि शठ तोको ताते आज यहि आंगन में निकरि देखायो गात। अबला अबल जानि तुहूं इतरात अरे नीरद विश्वासी कहा करत विश्वासघात॥ २६॥ मदभरे झूमैं नभ भूमैं परसत आवैं भारे कजरारे कारे अति उनए नए। द्विजदेव कीसों बक पांतन के व्याज बहु दंतन संवारे न्यारे न्यारे छबिसोंछए॥ धीर धुनि बोलैं डोलैं दिगित दिगन्त लौं आजभरे अमित मनोज फरमारए। पावस पठाये आए धीर तरु तोरिवे को नीरद न होहिं मनमथन मतंगए॥ २७॥ दीनो मन रंच ऊन चीठिनि बसीठिनपै कीनों कान कान कीन दीन अरजनि में। द्विजदेव कीसों जऊहारी वे सिखाय तऊ सुमुखि सखीनकी सुनी न बरजनि में॥ एरी मेरी वीर धीर काबिधि धरैंगी हीय चातक चवाइनि की चोखी चरजनि में। मेचक रजनिमें कदंब लरजनि में सुमेघ गरजनि में तड़ित तरजनि में॥ २८॥ लीने लेत ज्ञानको-

ऊ छीनेलेत आनि बानि लूटे लेत कोऊ हठि लाजके समाज को। द्विजदेव कीसों या अँध्यारी की अंधाधुंधि में लेत कोऊ कान्ह सुख सम्पति के साज को॥ एरी मेरी तोहि जऊ मानि मान दोष तऊ समय बिचारि कीजै ऐसे ऐसे काजको। तोहिं इतमान के अनादर न घेरोउत बादर न घेरोजाय जाय ब्रजराज को॥ २९॥ आवत चली ही यह बिषम बयारि देखु दबे दबे पायन कि वारन लरजिदे। कैलिया कलंकिनी कौ दैरी समुझाय मधुमाती मधु पालिन कुचालिन तरजिदे॥ आज ब्रजरानी के बियोग को दिवस ताते हरे हरे कीर बकवादिन हरजिदे। पीपीकै पुकारिबे की खोलैं ज्योंन जीहन त्यों बावरी पपीहन के जूहन बरजि दे॥ ३०॥ भूले भूले भौंर बन भावरैं भरैंगे चहूं फूलि फूलि किंशुक जकोसो रहिजायहैं। द्विजदेवकीसों वह कूजनि बिसासि कूर कोकिल कलंकी ठौर ठौर पछिताय हैं॥ आवत बसंत केन ऐहैं जो पै श्याम तोपै बावरी बलाय सों हमारेऊ उपाय हैं। पीहैं पहिलेई सों हलाहल मँगाय या कलानिधि की एकोकला चलन न पायहैं॥ ३१॥ भूले भूले भौंर बन भावरैं भरावैं कोक बरबसही तो कियो चाहै परबसुरे। द्विजदेव तापर अलापैं ए कलापिन की भरि भरि देइं गोद नित अपयशुरे॥ ताहूपै सुतेरे खन तीषन संतापन तें नेकहू बचाव होत मायके न ससुरे। तियन निकारि भले पायन पसारि अरे बावरे अनंग अब तुहीं ब्रज बसुरे॥ ३२॥

शीशफूल सरकि सुहावने ललाट लागे लामी लटैं लटकि परीहैं कटि छामपर। द्विजदेव त्योंहीं कछु हुलसि हिये तें हेलि फेलिगयो राग मुख पंकज ललाम पर॥ सेदसी करन ससवोर ह्वै सुरंग चीर दूनी द्युति दै रही सुहीरन के दामपर। केलि रस साने दोऊ थकित बिकाने तऊ हांकी होत कुमक सुनाकी धूमधामपर॥ ३३॥ अब मति देरी कान कान्हकी वसीठिनि पै झूंठे झूंठे प्रेम के पतौवन को फेरिदे। उरझि रहीरी जो अनेक पुरवातैं सोऊ नातेकी गिरह मूंदि नैनन निबेरिदे॥ मरन चहत काहू छैलपै छबीली कोऊ हाथन उठाय ब्रजबीथिनि में टेरिदे नेहरी कहांको जरि खेहरी भईतोअब देहरी उठाय वाके देहरीपै गेरिदे॥ ३४॥ सांझई समयते दुरिबैठि परदान दैके शंकमोहिं एकै या कलानिधि कसाईकी। कंतकी कहानी सुनि श्रवण सुहानी रैनि रंचक बिहानी या बसन्त अन्त घाईकी॥ कलकैन आलीनेक पलकैं लगन पाईं ठरि कितगई नींद नयनन धौं आईकी। कुहूकहे कोकिल कुमति में उघारेनयन जालह्वै जुदेखो ज्वालज्वलित जुन्हाई की॥ ३५॥

इतिश्री शर्मशाकद्वीपीय द्विज वंशावतंस श्रीमन्नृपति दर्शनसिंह बहादुरात्मज सरको वसरकशान महाराज मानसिंह बहादुर क्रायमजंग केसी एस आई निर्म्मिता शृङ्गारबत्तीसी समाप्ता॥

—०*०—

काहूकाहू भांति राति लागीती पलक तहां सपनेमें आय केलिरीति उन ठानीरी। आयदुरेजाय मम नयनन मुंदाय कछु हौंहूं बृजमारी ढूंढ़िबेको अकुलानिरी॥ एरी मेरी आली या निराली करताकी गति द्विजदेव नेकहून परत पिछानीरी। जौलों उठि आपनो पथिकपिय ढूंढ़ोंतौ-लों हाय इनआंखनते नींदई हिरानीरी॥ १॥ एहोब्रज नागर बराय ब्रज बालन अलज अंखियांमें निठुराईक्यों गहतुहौ। हरेभरे बिमल सुधारे सरवरमांह संगमिशिरी के विषघोरि उमहतुहौ॥ हाययदुराय कौनेगांवकी चलाई रीति कौनेमुख कौनी जीह बातन कहतुहौ। कलन करत यक पलन बिलोकेतब छलन छलायअब चलन चहतुहौ २॥

शुभम्भूयात्॥

इति॥
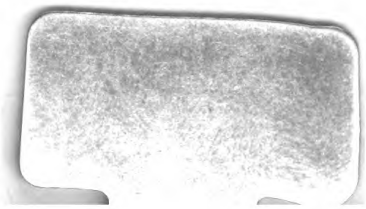
[illegible]